eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

21वीं सदी में महात्मा गाँधी के विचारों–सिद्धांतों की प्रासंगिकता

[1]डॉ0 कृष्ण कुमार सिंह
[1]एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बी.एड. विभाग, रामनगर पीजी कॉलेज, रामनगर, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

महात्मा गांधी शब्द आज की किसी व्यक्ति की ओर इंगित करने वाला शब्द मात्र नहीं अपितु एक सिद्धांत, एक विचार और अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने का एक मार्ग बन चुका है। सत्य और अहिंसा दो ऐसे हथियार गांधी जी के पास थे जिनके बल पर उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की जड़े हिला कर रख दी। गांधीजी के विचार, उनके सिद्धांत निःसंदेश आज भी प्रासंगिक हैं बशर्ते उन्हें हम अपने जीवन में व्यावहारिक स्तर पर उतारें।

शब्द संक्षेप– महात्मा गांधी, विचार, अधिकार, सिद्धांतों की प्रासंगिकता, स्वतंत्रता।

Introduction

जनवरी 2007 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में नई दिल्ली में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में अनेक देशों के प्रतिनिधियों तथा शांति कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि अहमद कवादे ने गांधीजी को आज भी प्रासंगिक बताते हुआ चार पृष्ठों का सत्याग्रह शताब्दी घोषणा–पत्र प्रस्तुत किया। इस घोषणा पत्र में हिंसा मुक्त विश्व का निर्माण के लिए छः संकल्प शामिल किया गए हैं।

ये सभी संकल्प आज 21वीं शताब्दी में भी गांधीजी को उतना ही प्रासंगिक बनाते हैं जितना कि वे समकालीन स्थितियों में थे। इस सम्मेलन में गांधी जी के जन्मदिवस को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किए जाने की मांग संयुक्त राष्ट्र संघ से की गई थी। यहां यह भी उल्लेखनीय कि जून 2007 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र महासभा के 103वीं सामान्य बैठक में इस मांग को स्वीकार करते हुए 2 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित करने का प्रस्ताव पारित किया गया। यह वास्तव में गांधीजी और उनके विचारों की वैश्विक प्रासंगिकता को पुष्टीकृत करने वाले कार्यवाही है। विश्व की सर्वोच्च संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस की घोषणा करते हुए जो पत्र जारी किया गया है उनमें गांधीजी के विचारों को आज की परिस्थितियों के सर्वथा अनुकूल और उपयोगी बताया गया है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

जहां तक गांधीवाद शब्द का संबंध है यह उनके द्वारा रचा गया शब्द नहीं बल्कि उनके विचारों, सिद्धांतों के समग्र रूप का पर्याय है। गांधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। यह वास्तव में उस काल की आवश्यकता थी। इसी माध्यम से उन्होंने देशवासियों को शोषक साम्राज्य से मुक्ति दिलाई। नेतृत्व की इस प्रक्रिया के दौरान गांधीजी के जो विचार और सिद्धांत जनमानस के सामने आए उन्हें ही बाद में गांधीवाद कहा गया। 'यंग इंडिया' में एक बार गांधी जी ने खुद लिखा था कि, 'मैंने किसी नवीन सिद्धांत की सृष्टि न करके प्राचीन सिद्धांतों को ही नवीन ढंग से दोहराने की चेष्टा की है'। 21वीं सदी में गांधीजी की प्रासंगिकता पर चर्चा करने के साथ–साथ हमें उनके विचारों सिद्धांतों पर भी वर्तमान स्थितियों का ध्यान रखते हुए चर्चा करनी होगी।

रामराज्य की परिकल्पनाः– गांधीजी देश का विकास गांवों से चाहते थे। उनके अनुसार देश के विकास का पहला स्वर्ग गांव है। रामराज्य के संबंध में गांधी जी ने एक स्थान पर स्वयं लिखा कि– धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से इसे पृथ्वी पर ईश्वर का राज्य कहा जा सकता है। राजनैतिक दृष्टि से यह एक ऐसा लोकतांत्रिक शासन होगा, जिसमें संपत्ति के होने या न होने का और रंग, जाति, धर्म, लिंग के भेदों पर आश्रित समस्त विषमताओं का अंत हो जाएगा। रामराज्य में गांधीजी नैतिक अनुशासन पर आधारित एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जहां किसी पर कोई रोक नहीं होगी। किंतु हर व्यक्ति आत्मानुशासन से बंधा होगा। गांधीजी इसे सुराज भी कहते थे।

गाँधीजी के जीवन दर्शन ने भारतीय जीवन व समाज में क्रांति को जन्म दिया। गांधी जी एक महान समाज सेवक, चिंतक तथा उच्चकोटि के शिक्षाशास्त्री थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम जिसके द्वारा भारतीय समाज उन्नति कर सकता है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा दर्शन का मूर्त रूप थी। इस शिक्षा का उद्देश्य भारतीय जनता के हृदय तथा मन को पवित्र करके एक शोषण विहीन समाज की स्थापना करना था। इस दृष्टि से गांधीजी को महान शिक्षाशास्त्री भी कहा जाता है। इस विषय में डॉक्टर एम. एस पटेल का कथन "ग्रीन का कथन था– पेस्टालॉजी वर्तमान शिक्षा सिद्धांत तथा व्यवहार का प्रारंभिक बिंदु था"। यह बात पश्चात शिक्षा के संबंध में सही हो सकता है। गांधीजी के शिक्षा संबंधी विचारों को निष्पक्ष अध्ययन इस बात सिद्ध करता है, कि वे पूरब में शिक्षा सिद्धांत और व्यवहार के प्रारंभिक बिंदु हैं।

भारतीय राजनीतिक चिंतन में महात्मा गांधी का एक अति महत्वपूर्ण स्थान है। महात्मा गांधी का दर्शन बहुमुखी है। उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र को स्पर्श किया है। उन्होंने महात्मा बुद्ध व सुकरात की तरह जीवन में सत्य की खोज की। उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित राजनीति

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

के व्यावहारिक पहलू पर जोर दिया। उनके विचारों में क्रमबद्धता न होने के कारण अनेक विचारकों ने उन्हें एक राजनीतिक विचारक मानने से इंकार किया है। लेकिन आज भी उनके राजनीतिक विचारों के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है। उनके दर्शन को गांधीवाद के नाम से पुकारा जाता है। इससे उनके राजनीतिक विचारक होने में कोई संदेह शेष नहीं रह जाता है। सत्य तो यह है कि उनके द्वारा राजनीतिक जीवन में प्रयोग किए सिद्धांत को ही उनके राजनीतिक विचारधारा है और वह स्वयं एक उच्च कोर्ट के राजनीतिक विचारक हैं।

गांधीजी के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांत निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो तथा सब भाषा में इसका प्रथम स्थान हो।
2. बालक–बालिकाओं के निहित गुणों का विकास करना चाहिए।
3. संपूर्ण राष्ट्र में 7 वर्ष की शिक्षा (07 से 14 वर्ष) अनिवार्य तथा निःशुल्क कर दी जाए।
4.बालकों की आध्यात्मिक, मानसिक व शारीरिक शक्तियों को प्रोत्साहित करना।
5.शिक्षा को मानव व्यक्तित्व–शरीर, हृदय, मस्तिष्क व आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास करना चाहिए।
6. शिक्षा को विद्यालय के एक बालक के शक्तियों का उस समुदाय के सामान्य हित के अनुसार जिसका कि वह सदस्य है, विकास करना चाहिए
7. बालकों को अपना ज्ञान सक्रिय रूप से प्राप्त करना चाहिए और उसे उनका प्रयोग सामाजिक वातावरण को समझने और उस पर अधिक उत्तम नियंत्रण करने हेतु करना चाहिए।
8. बालकों की शिक्षा में दस्तकारी शिक्षण को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए।

गांधी जी ने शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागों में बांटा था– (1) तात्कालिक उद्देश्य (2) अंतिम उद्देश्य

गांधी जी ने शिक्षा के निम्नलिखित तात्कालिक उद्देश्य बताए हैं–

1. बालकों को जीविकोपार्जन करने के योग्य बनाना
2. बालकों के उत्तम चरित्र का निर्माण करना
3. बालकों को सांस्कृतिक प्रशिक्षण देना
4. बालकों की शारीरिक व आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करना
5. व्यक्तित्व व सामंजस्यपूर्ण विकास करना

अंतिम उद्देश्य– गांधीजी के अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य है–सत्य

अथवा ईश्वर की प्राप्ति। शिक्षा के सारे उद्देश्य इस उद्देश्य के अधीन है। यह उद्देश्य वही आत्मानुभूति का उद्देश्य है जो भारतीय दर्शन में प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। इस उद्देश्य के

अनुसार गांधीजी बालक को सत्य अथवा ईश्वर के साथ साक्षात्कार कराना चाहते थे। उन्होंने लिखा है ''आत्मा का विकास करना चरित्र का निर्माण करना है तथा व्यक्ति को ईश्वर और आत्मानुभूति के लिए प्रयास करने के योग्य बनाना है।

गांधीजी ने सदैव सामाजिक न्याय की पैरोकार की और सामाजिक समानता पर बल देते हुए अस्पृश्यता को प्रोत्साहित किया। सामाजिक समानता की उनकी यह अवधारणा आज भी प्रासंगिक है। भारत विश्व के उन गिने–चुने देशों में है जहाँ अध्यात्मवाद को प्रारंभ से ही प्रश्रय मिलता रहा है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर भगवान श्रीराम, गुरु नानक जैसे अनेक महापुरुषों के विचारों से प्रेरित महात्मा गांधी सत्य को भगवान का स्वरूप मानते थे। किसी विशेष धर्म अथवा जाति की और उनका झुकाव न होकर वे सत्य के पुजारी थे और आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास करते थे। वे भौतिक उन्नति को नाश का कारण मानते थे। भौतिक उन्नति के चक्कर में लोग अध्यात्मवाद से विलग होते हैं। महात्मा गांधी का मानना था कि ऐसे समाज को विकास का अभिशाप भोगना पड़ता है। अध्यात्म के विकास के लिए सभी प्रकार की बुराइयों से एकजुट होकर लड़ना चाहिए। स्वतंत्रता, अध्यात्म वाद के विकास के लिए आवश्यक है और इस स्वतंत्रता को पाने के लिए राजनीति के क्षेत्र में भी उतरना चाहिए। राजनीतिक बुराइयां–पराधीनता और इससे उत्पन्न दुष्परिणाम आत्मा के विकास में बाधक होते हैं। अतः आत्मा के विकास के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना और संघर्ष करना अनिवार्य है। इसी प्रकार धर्म और राजनीति का गहरा संबंध है। जो देश के प्रति अपने कर्तव्यों से अपरिचित है, वह धर्म का अर्थ नहीं जानता। उनका कहना था कि, ''आध्यात्मिक एवं धार्मिक नियम एक विशेष क्षेत्र में ही कार्य करते हों ,यह आवश्यक नहीं, यह जीवन के सभी क्षेत्रों में अभिव्यक्त होता है, यह आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में अपना प्रभाव डालता है। गांधीजी राजनीति को धर्म मूलक, धर्म प्राण तथा सत्य और अहिंसा के धार्मिक सिद्धांतों से ओत–प्रोत और संचालित किए जाने वाला मानते थे, वे राजनीति को धार्मिक क्षेत्र की भांति आध्यात्मिक और पवित्र मानते थे।

गांधी जी के चिंतन में मानवीयता एवं लोक कल्याणकारी प्रविर्तियों की प्रधानता थी। वे भारतीयों की राजनीतिक पराधीनता तथा आर्थिक पराधीनता दोनों के लिए चिंतित रहा करते थे। आर्थिक पराधीनता से मुक्ति के लिए उन्होंने स्वदेशी आंदोलन का प्रसार किया। स्वदेशी आंदोलन पर टिप्पणी करते हुए

उन्होंने कहा था, ''स्वदेशी हमारे अंतराल की वह भावना है जो कि हमको सुदूर की अपेक्षा हमारे निकटतम पर्यावरण के प्रयोग एवं सेवा के लिए प्रेरित करती है''। वे प्रत्येक गांव को उत्पादकता

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

से जोड़ने चाहते थे। उनकी धारणा थी कि प्रत्येक गांव की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं उत्पादन करना चाहिए। इसी संदर्भ में वे आर्थिक विकेंद्रीकरण का भी विपक्ष लिया करते थे। मशीनों द्वारा किए जाने वाले उत्पादन की अपेक्षा वे लघु कुटीर उद्योग पर बल देते थे। आर्थिक क्षेत्र में उनके अनुसार यही स्वदेशी है। राजनीति एवं धार्मिक क्षेत्र में भी वे स्वदेशी के पक्षधर थे। अपने देश की राजनीतिक संस्थाओं को अपनाना और उनके विकास में सहयोग देना वे प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य समझते थे।

गांधीजी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आजीविका के लिए शारीरिक श्रम अवश्य करना चाहिए। वह बौद्धिक श्रम को महत्व नहीं देते थे। उनका मानना था कि शारीरिक श्रम से शरीर को ऊर्जा मिलती है साथ ही इससे उत्पादन भी होता है। श्रम की बचत करने वाले साधनों का उपयोग सीमित मात्रा में होना चाहिए। उनके अनुसार उत्पादक आवश्यकता की पूर्ति के लिए होना चाहिए। व्यापार या लाभ कमाने के लिए नहीं। इससे पूंजीवाद को बढ़ावा मिलता है, जो अंततः शोषण को बढ़ावा देता है।

महात्मा गांधी की सबसे महत्वपूर्ण व मौलिक देन राजनीतिक का आध्यात्मीकरण करना है। महात्मा गांधी राजनीतिज्ञ से पहले एक धार्मिक व्यक्ति थे। उन्होंने राजनीति और धर्म के बीच एक अटूट रिश्ता कायम किया और राजनीति को धर्म पर आधारित करके निःस्वार्थ लोक सेवा तथा नैतिकता के विकास का साधन बनाया। उनकी दृष्टि में धर्महीन राजनीति की कल्पना करना सबसे बड़ा पाप था। महात्मा गांधी ने राजनीति के प्रचलित अर्थ को नकारते हुए उसे नया रूप दिया। इसलिए वे राजनीतिक विचारक न होकर जीवन के कलाकार व धर्म के उपासक थे। उनके जीवन का उद्देश्य किसी राजनीतिवाद का प्रतिपादन करना नहीं था, बल्कि आत्मदर्शन ईश्वर का साक्षात्कार एवं मोक्ष था। इसलिए उन्होंने धर्म को मानव जीवन की धुरी बनाया और राजनीति के साथ अटूट रिश्ते के रूप में जोड़ दिया। उन्होंने छल–कपट पूर्ण राजनीति की निंदा करते हुए इसे सर्प की संज्ञा दी है। उनका मानना है कि धर्म के बिना उस राजनीति का कोई प्रयोजन नहीं है। यह प्राणी मात्र के लिए सुख का सच्चा साधन कदापि नहीं हो सकती। इसलिए उन्होंने राजनीति के विकृत रूप के मिटाने के लिए उसका आध्यात्मीकरण किया है। महात्मा गांधी से पहले राजनीति, धर्म और नैतिकता के सभी नियमों को ताक पर रखने वाले धूर्त, चालाक, अवसरवादी और विवेकशून्य राजनीतिज्ञों का रंगमंच माना जाती थी। आम आदमी की दृष्टि में दूसरों को मूर्ख बनाना तथा धोखा देना ही राजनीति थी।

वास्तव में गांधीजी ने विभिन्न समस्याओं से निपटने के लिए जिन उपायों अथवा साधनों का इस्तेमाल किया उनमें सत्याग्रह सबसे प्रमुख था। यह भी कहने में आज अतिश्योक्ति न होगी कि उनका यह विचार 21वीं सदी में भी पूरी तरह प्रासंगिक है। 1922 के आसपास सत्याग्रह से उनका विचार पूरी तरह विकसित नहीं हुआ था, उन्होंने कहा था कि," मेरे पथ प्रदर्शन हेतु कोई सिद्धांत उपलब्ध नहीं है। सत्याग्रह की पूर्ण मीमांसा करने से मैं असमर्थ हूं और अंधकार में टटोलकर चल रहा हूं।यदि तुम्हें मेरे विचार रुचिकर लगे तो मेरे साथ चलो"।

संदर्भः–

(1) गोपीनाथ धवनः द पॉलीटिकल फिलासफी ऑफ महात्मा गांधी, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद 1990

(2) अय्यर, राघवन, द ओरल एंड पॉलीटिकल थॉट ऑफ महात्मा गांधी, ओ.यू.पी दिल्ली 19731

(3) पांडेय ,डॉ राम शकल (2003); उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक प्रकाशन,आगरा–2

(4) सक्सेना, एम.आर स्वरूप, चतुर्वेदी, शिखा; उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो

(5) सोनी रामगोपाल (2004–05), उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक, एच.पी.भार्गव बुक हाउस

(6) पचौरी, डॉक्टर गिरीश (2010); उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, लॉयन बुक डिपो, मेरठ

(7) माथुर, डॉ. एस.एस (1997);शिक्षक के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार ,विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा–2

(8) शंकधीर , एम. एम. अंडरस्टैंडिंग गाँधी टुडे,दीप एंड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1996

(9)अग्रवाल जे.सी (2012) उदीयमान; भारतीय समाज में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2